एवररेडी बन अंतिम समय का आह्वान करो

24-6-72

अपने को बाप समान समझते हो? बाप समान स्थिति के समीप अपने को अनुभव करते हो? समान बनने में अब कितना अन्तर बाकी रहा है? बहुत अन्तर है वा थोड़ा? लक्ष्य तो सभी का यह है कि बाप समान बनें और बाप का लक्ष्य है कि बच्चे बाप से भी ऊंचे बनें, अब प्रैक्टिकल में क्या है? बाप के समान सामना करने की शक्ति नहीं आई है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अन्तर है। किसका कितना अन्तर, किसका कितना है। सभी का एक समान नहीं है। ५०३ अन्तर तो बहुत है। इसको कितने समय में मिटायेंगे? अब तक बाप और बच्चों में इतना अन्तर क्यों? अपने को एवररेडी समझते हो ना। तो एवररेडी का अर्थ क्या है? एवररेडी सदा समय का आह्वान करते हैं। तो जो एवररेडी का अर्थ क्या है? एवररेडी सदा समय का आह्वान करते हैं। तो जो एवररेडी होता है वह आह्वान करते हुये अपने को सदा तैयार भी रखते हैं। अन्तिम समय का सामना करने के लिए अब तैयार होना है ना? अगर समय आ जाए तो प्राप्ति ५०३। समानता की प्राप्ति क्या होगी? एवररेडी अर्थात् सदा अन्तिम समय के लिए अपने को सर्वगुण सम्पन्न बनाने वाला। सम्पन्न तो होना है ना। गायन भी है सर्वगुण सम्पन्न बनाने वाला। सम्पन्न तो होना है ना। गायन भी है सर्वगुण सम्पन्न, १६ कला सम्पूर्ण। तो एवररेडी अर्थात् सम्पन्न स्टेज। ऐसा प्रैक्टिकल में हो जो सिर्फ एक कदम उठाने की देरी हो। एक कदम उठाने में कितना समय लगता है? इतना सिर्फ अन्तर होना चाहिए। इसको कहेंगे १-२ परसेंट। कहां एक-दो परसेंट, कहां ५० ३ फर्क हुआ ना। ऐसा एवररेडी वा सर्वगुण सम्पन्न बाप के समान बनने के लिए बाप-दादा द्वारा मुख्य तीन चीजें हरेक को मिली हुई हैं। उन तीनों की प्राप्ति है तो बाप समान बनने में कोई देरी नहीं लगती। वह तीन चीजें कौनसी बाप ने दी हैं? (श्रीमत, समर्पण और सेवा) यह तो चलने वा करने की बातें सुनाई, लेकिन देते क्या है? सेवा भी कर सकते हो, समर्पण भी हो सकते हो लेकिन किसके आधार से? जन्म तो लिया लेकिन दिया क्या? वर्से में भी मुख्य क्या देते हैं? (हरेक ने बताया) भल रहस्य तो आ जाता है सिर्फ स्पष्ट करने के लिए भिन्न रुप से सुनाया जाता है। पहले-पहले देते हैं लाइट, दूसरा देते हैं माइट, तीसरा देते हैं डिवाइन इनसाइट अर्थात् तीसरा नेत्र। अगर यह तीन चीजें नहीं हैं तो तीव्र पुरुषार्थी बन बाप के समान नहीं बन सकते। पहले तो जो आत्मायें बिल्कुल अज्ञान अंधेरे में आ चुकी हैं, उनको रोशनी अर्थात् लाइट चाहिए और लाइट के साथ फिर अगर माइट नहीं है तो लाइट की भी जो मदद लेनी चाहिए

वह नहीं ले पाते। इस लाइट और माइट के साथ जो तीसरा नेत्र अर्थात् डिवाइन इनसाइट देते हैं उससे अपने पास्ट, प्रेजेन्ट और फ्यूचर तीनों ही कालों को वा तीनों ही जीवन को जान सकते हो। जब यह तीनों ही कालों को वा तीनों ही जीवन को जान सकते हो। जब यक तीनों ही चीजें प्राप्त होती हैं तब ही अपना बर्थराइट प्राप्त कर सकते हो अर्थात् वर्सा प्राप्त कर सकते हो। तो पहले लाइट, माइट और डिवाइन इनसाइट देते हैं। इस द्वारा ही अपने बर्थराइट को पा सकते हो और राइट कोजान सकते हो। राइट शब्द के भी दो अर्थ होते हैं। एक अर्थ है बर्थ राइट अर्थात् वर्सा और दूसरा राइट और रांग की पहचान मिली है इसलिए बाप को ट्रूथ कहा जाता है अर्थात् सत्य वा राइट। सत्य की पहचान तब कर सकते हो जब यह तीनों चीजें प्राप्त हैं। अगर एक भी चीज की कमी है तो रांग से राइट तरफ नहीं चल पाते हो। रोशनी होगी तब ही मार्ग को तय कर सकेंगे वा अपने पुरुषार्थ की स्पीड को तेज कैसे कर सकेंगे? जैसे देखो, इस पुरानी दुनिया में जब ब्लैक आउट होता है तो स्पीड को ढीला कर देते हैं। तेज स्पीड अलाउ नहीं करते हैं क्योंकि एक्सीडेंट होने का डर रहता है। तो ऐसे ही अगर पूरी लाइट नहीं तो स्पीड को तीव्र नहीं कर सकते हो। स्पीड ढीली चलती रहेगी। साथ-साथ अगर माइट नहीं है तो लाइट के आधार से चल तो पड़ते हो लेकिन माइट ना होने के कारण जो विघ्न सामने आते हैं उनका सामना नहीं कर पाते। इसलिए स्पीड रुकने के कारण सामना ना कर पायेंगे। तो रुक जायेंगे। बार-बार रुकने के कारण भी स्पीड तेज अर्थात् तीव्र पुरुषार्थ नहीं कर पाते हो और डिवाइन इनसाइट अर्थात् दिव्य नेत्र, तीसरा नेत्र खुला हुआ नहीं है, चलते-चलते माया बंद कर देती है। जैसे आजकल गवर्नमेंट भी किसी को पकड़ने के लिए वा किसी हंगामें को बंद करने के लिए गैस छोड़ती है तो आंखें बंद हो जाती हैं, आंसू आने के कारण देख नहीं पाते हैं, जो करना चाहते वह कर नहीं पाते। इसी रीति जो तीसरा नेत्र मिला है, अगर माया की गैस वा धूल उनमें पड़ जाती है तो तीसरा नेत्र होते हुए भी जो देखना चाहते हैं वह देख नहीं पाते हैं। तीनों चीजें आवश्यक हैं। तीनों ही अगर ठीक हैं, यथार्थ रीति प्राप्त हैं, जैसे बाप ने दी हैं वैसे ही धारण कर रहे हैं, उसी आधार पर चल रहे हैं तो कब भी रांग कर्म वा असत्य कर्म कर नहीं सकते, सदाराइट तरफ जायेंगे। रांग हो ही नहीं सकता क्योंकि तीसरे नेत्र द्वारा राइट-रांग जान लेते हैं। जब जान लिया है तो फिर रांग नहीं करेंगे। लेकिन माया की धूल पड़ने से परख नहीं सकते, इसलिए राइट को छोड़ रांग की तरफ चले जाते हैं, तो कब भी कोई रांग वा असत्य कर्म होता वा संकल्प भी उत्पन्न होता है वा असत्य शब्द निकलता है तो समझना चाहिए कि इन तीनों चीजों में से किसी चीज की कमी हो गई, इसलिए जजमेंट नहीं कर पाते हैं। और जब तक रांग-राइट को नहीं जानते हो तो सम्पूर्ण बर्थराइट भभ् नहीं ले सकते। राइट कर्म से सम्पूर्ण बर्थराइट मिलता है। अगर राइट कर्म नहीं है, कब राइट कब रांग होता है तो बर्थ राइट भी सम्पूर्ण नहीं मिलेगा। जितना राइट संकल्प और कर्म करने में कमी होगी, उतना ही बर्थराइट लेने में भभ् कमी होगी। तो यह तीनों प्राप्ति सदा कायम रहें, उसके लिए मुख्य किस बात का अटेन्शन रहना चाहिए जो बहुत सहज है और सभी कर सकते हैं? रिवाइज कोर्स मे भी वही सहज युक्ति बार-बार रिवाइज हो रही है। रिवाइज कोर्स अटेन्शन से सुनते हो, पढ़ते हो? ऐसे तो नहीं समझते हो जानी जाननहार हो गये? जानी-जाननहार अपने को समझ कर रिवा-इज कोर्स को हल्का तो नहीं छोड़ देते हो? आज पेपर लेते हैं। ऐसा कौन है जो एक दिन

भी रिवाइज़ कोर्स की मुरली मिस नहीं करते हैं।